

डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 9, बुराई की समस्या

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए अपने व्याख्यान हैं। यह सत्र 9 है, बुराई की समस्या।

ठीक है, हमने ईश्वरवादी विश्वास के लिए कई सबूतों और तर्कों के बारे में बात की है।

अब, आइए ईश्वरवादी विश्वास की सबसे महत्वपूर्ण आपत्ति या आलोचना के बारे में बात करते हैं, जो कि बुराई की समस्या है। जिसे बुराई की शास्त्रीय समस्या के रूप में जाना जाता है, एक दार्शनिक आपत्ति के रूप में, सबसे पहले प्राचीन दार्शनिक एपिक्यूरस ने तीसरी या चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में व्यक्त किया था। समस्या या आपत्ति वास्तव में एक प्रश्न के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है, और वह यह है कि एक अच्छे, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ ईश्वर के अस्तित्व को दुनिया में बुराई की वास्तविकता के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है?

तो, आइए बुराई की एक मानक परिभाषा पर ध्यान देकर शुरू करें। यह ऑगस्टीन से वापस जाता है, और वह यह है कि बुराई अच्छाई का अभाव या अस्तित्व का अभाव है। यह अच्छाई की कमी है। और यह, आज तक, मुझे लगता है कि बुराई की प्रचलित परिभाषा है, कम से कम ईश्वरवादी परंपराओं में।

और मैंने जो अन्य परिभाषाएँ सुनी हैं, वे इस परिभाषा के भिन्न रूप हैं। मैं ईसाई दार्शनिक डग गेवेट का मित्र हूँ। हम एक समय पर बुराई की समस्या के बारे में बात कर रहे थे, और उन्होंने बुराई की ऑगस्टिनियन परिभाषा से कुछ असंतोष व्यक्त किया।

मैंने पूछा, अच्छा, आप बुराई को कैसे परिभाषित करेंगे? उन्होंने कहा कि मैं इसे उस तरीके से विचलन के रूप में परिभाषित करता हूँ जिस तरह से चीजें होनी चाहिए। जब मैंने इस पर विचार किया, तो मुझे एहसास हुआ कि यह ऑगस्टीनियन थीम पर एक तरह का बदलाव है, जो बुराई को अच्छाई की कमी के संदर्भ में परिभाषित करता है। इस मामले में, मैं इसे चीजों के अनुरूप होने में विफलता के रूप में समझता हूँ।

लेकिन बुराई की उस सामान्य परिभाषा को ध्यान में रखते हुए, हम बुराई की दो प्रमुख श्रेणियों या दो अलग-अलग प्रमुख तरीकों के बीच अंतर कर सकते हैं, जिनमें हम अच्छाई की कमी या अच्छाई की कमी का अनुभव करते हैं। उनमें से एक प्राकृतिक बुराई है, और वह बुराई है जो तूफान, अकाल, कैंसर, सभी प्रकार की संक्रामक बीमारियों और जन्म दोषों जैसी प्राकृतिक घटनाओं के परिणामस्वरूप होती है। ये सभी प्राकृतिक बुराई के उदाहरण होंगे।

और फिर आपके पास नैतिक बुराई है, जो स्वतंत्र प्राणियों के चुनाव से उत्पन्न होने वाली बुराई है, है न? बलात्कार, और हत्या, और झूठ बोलना, और चोरी। ये सभी नैतिक बुराइयाँ हैं। तो, चाहे वह

प्राकृतिक बुराई हो या नैतिक बुराई, हम उन चीज़ों के बारे में बात कर रहे हैं जो उस तरीके से अलग हैं जिस तरह से होनी चाहिए।

हम अच्छाई के अभाव के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन वे अलग-अलग रूपों में आते हैं। इसलिए आपके पास प्राकृतिक बुराई और नैतिक बुराई है। पिछले 30-40 वर्षों के एक प्रमुख धर्मशास्त्री विलियम रोवे नामक दार्शनिक हैं।

उन्होंने कई वर्षों तक पड़्यु विश्वविद्यालय में पढ़ाया, और उन्होंने कई दशक पहले एक लेख लिखा था जो व्यापक रूप से संकलित हो चुका है, जिसमें उन्होंने तर्क दिया है कि नास्तिकता तर्कसंगत रूप से उचित है क्योंकि, या नास्तिकता के तर्कसंगत रूप से उचित होने का एक मुख्य कारण बुराई की इस समस्या के कारण है, जिसे वे एक औपचारिक तर्क में प्रस्तुत करते हैं जो इस प्रकार है। कि तीव्र पीड़ा के ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जिन्हें एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व्यक्ति बिना किसी बड़ी अच्छाई को खोए या किसी समान रूप से बुरी या बदतर बुराई को अनुमति दिए बिना रोक सकता था। ध्यान दें कि वह यहाँ प्राकृतिक बुराई पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

दूसरा, एक सर्वज्ञ, पवित्र, अच्छा प्राणी किसी भी तीव्र पीड़ा की घटना को रोक सकता है, जब तक कि वह ऐसा न कर सके, क्योंकि इससे कोई बड़ी भलाई नहीं खोनी पड़ती या कोई बुराई उतनी ही बुरी या उससे भी बदतर नहीं होती। इसलिए, एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, पवित्र, अच्छा प्राणी मौजूद नहीं है। तो यह बुराई पर आधारित आस्तिकता के खिलाफ रोवे का तर्क है।

उन्होंने कहा कि दूसरा आधार ऐसा है जिसे आस्तिक और नास्तिक दोनों ही स्वीकार करेंगे, है न? चाहे आप नास्तिक हों या आस्तिक, आपको यह मानना चाहिए कि एक सर्वज्ञ, पवित्र, अच्छा प्राणी किसी भी तीव्र पीड़ा की घटना को रोक सकता है, जब तक कि वह ऐसा कुछ बड़ा अच्छा खोए बिना या कुछ बुराई की अनुमति दिए बिना नहीं कर सकता जो उतनी ही बुरी या बदतर है। इसलिए, उनका मानना है कि आस्तिक और नास्तिक दोनों ही पहले आधार को स्वीकार करेंगे, कि तीव्र पीड़ा के ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जिन्हें एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ प्राणी कुछ बड़ा अच्छा खोए बिना या कुछ बुराई की अनुमति दिए बिना रोक सकता था जो उतनी ही बुरी या बदतर है। क्या यह सच है? ऐसा क्यों विश्वास करें? रोवे कहते हैं कि मानवीय अनुभव हमारे इस विश्वास को सही ठहराता है कि इस तरह की पीड़ा के कुछ उदाहरण हैं।

आइए इसे अनावश्यक बुराई कहें। अनावश्यक बुराईयाँ वे हैं जो पूरी तरह से अनावश्यक हैं और व्यापक भलाई में योगदान नहीं देती हैं। और वह इसका उदाहरण जंगल में एक निर्दोष जानवर का हवाला देकर देता है।

एक छोटा हिरण का बच्चा जंगल की आग में फंस जाता है और एक दयनीय, दर्दनाक मौत मर जाता है। और हम जानते हैं कि ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि हमने आग लगने के बाद जानवरों के शवों को खोजा है। ऐसे जानवर को इतनी बुरी तरह से पीड़ित होने से क्या फायदा हो सकता है? क्या भगवान इसे रोक नहीं सकते थे? तो यह एक अनावश्यक बुराई की तरह लगता है।

अन्य दार्शनिकों ने मानवीय घटनाओं में अनावश्यक बुराई के मामलों की पहचान की है, जहाँ लोगों को यातनाएँ दी जाती हैं और उन्हें इस तरह से भयानक भाग्य का सामना करना पड़ता है

कि ईश्वर की शक्ति और अच्छाई के संदर्भ में इसका हिसाब लगाना असंभव लगता है। इसलिए, रोवे के तर्क पर हमला करने या उसकी आलोचना करने के दो तरीके हैं, जिनकी उन्होंने पहचान की है। पहला वह है जिसे वे प्रत्यक्ष हमला कहते हैं, जो उस पहले आधार को अस्वीकार करना होगा और यह दिखाकर ऐसा करना होगा कि, देखिए, कुछ ऐसे अच्छे हैं जो किसी भयानक घटना के परिणामस्वरूप प्राप्त हो सकते हैं, चाहे वह हिरण के बच्चे का जलना हो या किसी मासूम बच्चे का पीड़ित होना।

रोवे का जवाब यहाँ यह है कि आस्तिक परंपरा कथित तौर पर यह मानती है कि जीवन ऐसा है कि हम दुनिया में ईश्वर के सभी उद्देश्यों को नहीं जान सकते। इसलिए, यदि आस्तिक प्रत्येक बुराई के लिए एक स्पष्टीकरण प्रदान करने का प्रयास कर रहा है, तो यह आस्तिक परंपरा और उसके निर्णय के विरुद्ध प्रतीत होता है, जिसे रहस्य की अनुमति होनी चाहिए। लेकिन उस आधार पर बुराई की समस्या के प्रति उसके जवाब में आस्तिक को हथकड़ी लगाना उसके लिए नाजायज होगा।

सिर्फ इसलिए कि हम रहस्य को स्वीकार करते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि संभावित अच्छाइयों की पहचान करने की कोशिश करना अनुचित है जो बुराई या दर्दनाक स्थितियों से उत्पन्न हो सकती हैं। उनके तर्क की आलोचना करने का एक और तरीका, उन्होंने कहा, वह है जिसे वे अप्रत्यक्ष हमला कहते हैं, और वह दूसरे आधार की पुष्टि करना और इस निष्कर्ष को अस्वीकार करना होगा कि कोई ईश्वर नहीं है, और इसलिए, निष्कर्ष निकालना है, नहीं, एक ईश्वर है जो सर्वशक्तिमान है, जो सब अच्छा है, जो सर्वज्ञ है। इससे जो निष्कर्ष निकलता है, क्योंकि यह एक वैध तर्क है, वह यह है कि पहला आधार गलत होना चाहिए।

और मुझे लगता है कि यह एक ऐसा दृष्टिकोण होगा, जिसे मैं जानता हूँ, अधिकांश आस्तिक, अधिकांश ईसाई जो मैं जानता हूँ, यह कहने का दृष्टिकोण अपनाएँगे कि, मैं यह नहीं समझ सकता कि उस हिरण के बच्चे को क्यों जला दिया गया, भगवान ने ऐसा क्यों होने दिया या छोटे बच्चों को क्यों पीड़ा दी, लेकिन मैं जानता हूँ कि भगवान वास्तविक हैं। और मैं जानता हूँ कि वह सिर्फ अनावश्यक बुराइयों की अनुमति नहीं देते हैं; वह बिना किसी अच्छे कारण के पीड़ा और भयानक घटनाओं को होने नहीं देते हैं, भले ही मैं यह न पहचान पाऊँ कि वह क्या है। लेकिन यह पहला आधार सत्य नहीं हो सकता।

रोवे का जवाब है कि आस्तिक इस तरह से तर्क कर सकते हैं, और यह आस्तिक का सबसे अच्छा तरीका लगता है, लेकिन ईश्वर में विश्वास करने के लिए स्वतंत्र आधार होने चाहिए। और वे कारण क्या हो सकते हैं? वह निश्चित रूप से ऐसा व्यक्ति नहीं है जो इस बात पर आश्वस्त हो कि ईश्वर के लिए स्वतंत्र सबूत मौजूद हैं जो इस बात पर आश्वस्त होने के लिए पर्याप्त निर्णायक हैं कि ऐसा कोई अस्तित्व है। तो शायद यह अंततः उसी पर आकर खत्म होता है।

रोवे के विचार में ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करने के लिए हमारे पास कौन से स्वतंत्र कारण हैं? और मुझे यकीन है कि वह इस विचार से भी सहानुभूति नहीं रखते थे कि ईश्वर में विश्वास करना उचित रूप से बुनियादी बात है। तो, नास्तिक को आस्तिक की स्थिति की तर्कसंगतता के बारे में

क्या स्थिति लेनी चाहिए? रोवे तीन अलग-अलग विकल्पों में अंतर करते हैं। उनमें से एक वह है जिसे वह अमित्र आस्तिकवाद, अमित्र नास्तिकता कहते हैं।

और यह दृष्टिकोण यह है कि कोई भी व्यक्ति तर्कसंगत रूप से यह मानने के योग्य नहीं है कि ईश्वरवादी ईश्वर का अस्तित्व है। यह निश्चित रूप से उन नए नास्तिकों के दृष्टिकोण की विशेषता होगी जिनके बारे में हमने बात की है। मुझे लगता है कि डेनेट, डॉकिंस, हैरिस और हिचेन्स सभी नास्तिक होंगे।

फिर से, उस अर्थ से, आप जानते हैं, यह दृष्टिकोण है कि कोई भी व्यक्ति ईश्वर में विश्वास करने में तर्कसंगत रूप से उचित नहीं होगा। लेकिन आप एक उदासीन नास्तिक हो सकते हैं और यह मान सकते हैं कि आस्तिक होना तर्कसंगत रूप से उचित हो सकता है या नहीं, मूल रूप से उस मुद्दे पर कोई स्थिति नहीं लेना चाहिए। या कोई एक दोस्ताना नास्तिक हो सकता है, और यह दृष्टिकोण है कि आस्तिक ईश्वर के अस्तित्व में अपने विश्वास में तर्कसंगत रूप से उचित हो सकता है, भले ही, आप जानते हैं, वे इस तथ्य को एक तथ्य मानते हैं कि कोई ईश्वर नहीं है।

यहाँ विचार यह है कि कोई व्यक्ति किसी ऐसी बात पर उचित रूप से विश्वास कर सकता है जो झूठी है। किसी ऐसे विश्वास को तर्कसंगत रूप से धारण करना संभव है जो झूठा है, सिर्फ इसलिए क्योंकि सबूत या दुनिया को किसी तरह से, आप जानते हैं, सुसंगत रूप से कुछ औचित्य के साथ समझा जा सकता है जो, आप जानते हैं, झूठा है। इसलिए वह एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण देता है जो एक वाणिज्यिक जेट पर है जो समुद्र में दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है।

और जब इस बारे में खबर फैली, तो उन्हें कोई जीवित व्यक्ति नहीं मिला। यह समाचारों में बताया गया, और, आप जानते हैं, सभी को मृत मान लिया गया। लेकिन यह एक व्यक्ति दुर्घटना में बच गया, और वह प्रशांत महासागर के बीच में पानी में ऊपर-नीचे उछल रहा है, और उसके विचार उसके परिवार के सदस्यों और दोस्तों के लिए हैं, जिन्हें वह जानता है कि वे मानते हैं कि वह मर चुका है।

और वे तर्कसंगत रूप से यह मानने में उचित हैं कि वह मर चुका है। समुद्र के बीच में इस तरह की एयरलाइन दुर्घटना में कितने लोग बचेंगे? तो यह एक गलत लेकिन तर्कसंगत विश्वास होगा कि वह, साथ ही साथ बाकी सभी लोग मर चुके हैं, भले ही कम से कम एक व्यक्ति जीवित बचा हो। हम गलत तर्कसंगत विश्वासों के अन्य उदाहरणों के बारे में सोच सकते हैं।

हम पृथ्वी की प्रकृति से लेकर अतीत में हर चीज़ के बारे में मान्यताओं को देखते हैं, या उस तकनीक से पहले कितने ग्रह माने जाते थे, जो हमें हमारे सौर मंडल के बाहरी हिस्सों में झाँकने और नेपच्यून और यूरेनस और प्लूटो जैसे ग्रहों की खोज करने में सक्षम बनाती है। मैं अब भी मानता हूँ कि प्लूटो एक ग्रह है, भले ही इसे अयोग्य घोषित कर दिया गया हो। लेकिन उन दिनों ऐसे ग्रहों की खोज करने की कोई तकनीकी क्षमता नहीं थी।

इसलिए, उस समय लोग इस बात पर तर्कसंगत थे कि हमारे सौर मंडल में केवल पाँच या छह या सात ग्रह हैं, भले ही वह विश्वास गलत था। तो यहाँ रोवे का विचार यही है, और इसीलिए वह खुद को इस संबंध में एक दोस्ताना नास्तिक मानते हैं, और कहते हैं कि हाँ, आप आस्तिक गलत हैं।

कोई ईश्वर नहीं है, लेकिन आप अभी भी कई कारकों के आधार पर अपने विश्वास को तर्कसंगत रूप से बनाए रख सकते हैं।

इससे एक दिलचस्प सवाल उठता है, और वह यह है: यदि आप आस्तिक होते, तो क्या आप एक मित्रवत आस्तिक होते या एक अमित्रवत आस्तिक? क्या आप मानते हैं कि कोई व्यक्ति तर्कसंगत तरीके से नास्तिक दृष्टिकोण रख सकता है? यदि ऐसा है, तो आप एक मित्रवत आस्तिक होंगे यदि आपको नहीं लगता कि यह कभी भी एक तर्कसंगत विश्वास हो सकता है जो आपको इस शब्दावली के अनुसार एक अमित्रवत आस्तिक बनाता है। तो वैसे भी, यह रोवे का निष्कर्ष है। हमारे पास यह मानने का अच्छा कारण है कि बुराई की समस्या के कारण कोई ईश्वर नहीं है, लेकिन जो लोग आस्तिक हैं वे अभी भी संभावित रूप से अपने दृष्टिकोण को तर्कसंगत रूप से रख सकते हैं, भले ही वह आश्वस्त हो कि कोई ईश्वर नहीं है।

विलियम एलस्टन, दिवंगत महान ईसाई ज्ञानमीमांसक, ने रोवे के तर्क का जवाब दिया और इस थीसिस का बचाव किया कि रोवे का तर्क त्रुटिपूर्ण है क्योंकि पहला आधार संदिग्ध है और वास्तव में, मानवीय समझ की सीमाओं के कारण इसका बचाव नहीं किया जा सकता है। एलस्टन ने इस तरह के कई मुद्दों पर चर्चा की, विडंबना यह है कि ईसाईयों के रूप में हमारे धार्मिक विश्वासों में विश्वास को मजबूत करने के तरीके के रूप में हमारी ज्ञानमीमांसा सीमाओं को उजागर किया। लेकिन एलस्टन रोवे के पहले आधार की आलोचना करते हैं, जो यह है कि, याद रखें, दुख के ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जिन्हें एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व्यक्ति बिना किसी बड़ी अच्छाई को खोए या किसी बुराई को अनुमति दिए बिना रोक सकता था जो समान रूप से बुरी या बदतर है।

एलस्टन कहते हैं कि हम इस आधार को स्वीकार करने के लिए उचित नहीं हैं। खैर, क्यों नहीं? वे कहते हैं, और यह उनके हवाले से है, कि प्रश्न की परिमाण या जटिलता ऐसी है कि हमारी शक्तियाँ, डेटा तक पहुँच, इत्यादि, इस आधार को स्वीकार करने के लिए पर्याप्त वारंट प्रदान करने के लिए मौलिक रूप से अपर्याप्त हैं। इसलिए हमारे पास स्थिति की इतनी गहनता से जाँच करने की क्षमता नहीं है, न केवल शारीरिक रूप से बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक रूप से, कि हम बस आश्वस्त नहीं हो सकते कि ऐसे दुख के मामले हैं जिन्हें एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व्यक्ति कुछ महान अच्छाई को खोए बिना या कुछ बुराई की अनुमति दिए बिना रोक सकता था जो उतनी ही बुरी या बदतर है।

और उन्होंने कहा कि आधार का मामला, या यह धारणा कि ये वास्तव में अनावश्यक बुराइयाँ हैं, एक बुनियादी अनुमान पर निर्भर करता है। यह एक बहुत ही सरल अनुमान है जिसे वह यहाँ पहचानता है, और यह मूल रूप से यह है: जहाँ तक मैं बता सकता हूँ, P ही मामला है। इसलिए, P ही मामला है।

अब, यह कुछ ऐसा है जो हम सभी करते हैं, आस्तिक, नास्तिक और अज्ञेयवादी, अगर हम ज्ञानात्मक रूप से अधिक सावधान होते, तो हम इतना नहीं करते। कई मामलों में, यह अपेक्षाकृत हानिरहित है। आप जानते हैं, लोग खेल टीमों, या खिलाड़ियों के बारे में बहस करते हैं।

मुझे लगता है कि, आप जानते हैं, टॉम ब्रेडी अब तक खेले गए सबसे महान क्वार्टरबैक हैं। किसी दूसरे व्यक्ति को लगता है कि, आप जानते हैं, पीटन मैनिंग या डू ब्रीज़ या जॉन एलवे अब तक के सबसे महान क्वार्टरबैक हैं। जहाँ तक मैं बता सकता हूँ, यह मामला है।

और फिर दूसरा व्यक्ति कहता है, ठीक है, जहाँ तक मैं बता सकता हूँ, तो प्रत्येक को विश्वास है कि उनका दृष्टिकोण सही है। लेकिन सिर्फ़ इसलिए कि यह आपको ऐसा लगता है, या जहाँ तक आप बता सकते हैं, और एक आरामकुर्सी फुटबॉल इतिहासकार के रूप में साक्ष्य के बारे में आपकी सीमित जानकारी, आप जानते हैं, इसका यह मतलब नहीं है कि आपका दृष्टिकोण सही है। इसलिए, हम सभी को अधिक ज्ञानात्मक विनम्रता की आवश्यकता है।

लेकिन उन मामलों में, यह अपेक्षाकृत हानिरहित है। लेकिन जब आप ईश्वर के अस्तित्व या गैर-अस्तित्व जैसे बड़े और महत्वपूर्ण मुद्दे के बारे में बात कर रहे हैं, तो हमें यहाँ बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है। हमारे निष्कर्ष पर बहुत कुछ निर्भर करता है।

उनका कहना है कि अक्सर यह एक कमजोर अनुमान होता है, जैसा कि वे कहते हैं, इस तरह के दावे में न्यायोचित होने के लिए, किसी को उन सभी जीवित संभावनाओं को बाहर करने में न्यायोचित होना चाहिए, जिनके अस्तित्व को दावा नकारता है। तो, इस बात के क्या संभावित कारण हो सकते हैं कि भगवान ऐसे तीव्र दुख की अनुमति क्यों दे सकते हैं जो अनावश्यक लगता है? यही सवाल है। दुनिया में बुराई के अस्तित्व का हिसाब लगाने की कोशिश करते समय, चाहे वह तीव्र पीड़ा हो या अनैतिकता, जब कोई यह सिद्धांत बनाता है कि, हम्म, शायद यही कारण है कि भगवान इसकी अनुमति देते हैं, तो वह एक थियोडिसी कहलाने वाली बात पेश कर रहा होता है।

थियोडिसी बुराई की अनुमति देने के लिए ईश्वर के कारणों की पहचान करने का एक प्रयास है। बुराई की अनुमति देने के लिए ईश्वर के क्या कारण हो सकते हैं? जब आप एक सिद्धांत के साथ आते हैं, जो, आप जानते हैं, इसे समझाने का प्रयास करता है, तो आप थियोडिसी कर रहे हैं। इसलिए, एल्स्टन कई प्रमुख थियोडिसी की समीक्षा करते हैं, उनमें से सभी नहीं, लेकिन कुछ सबसे महत्वपूर्ण हैं, यह दिखाने के लिए कि, हम सभी जानते हैं, शायद, आप जानते हैं, एक विशेष थियोडिसी यहाँ एक स्पष्टीकरण प्रदान करती है, भले ही यह पहली नज़र में ऐसा न लगे।

इनमें से एक है सजा का सिद्धांत, जो कहता है कि भगवान पाप की सजा के रूप में कुछ प्रकार के कष्टों की अनुमति देते हैं, शायद कभी-कभी पीड़ित व्यक्ति को सुधारने के लिए। अब, यह जंगल में छोटे बांबी पर लागू नहीं हो सकता है, है ना? ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके लिए उस छोटे हिरण को पश्चाताप करना पड़े, लेकिन यह सभी प्रकार की दर्दनाक स्थितियों पर लागू हो सकता है जिसमें मनुष्य खुद को पाता है। और यह अक्सर मुश्किल होता है, अगर असंभव नहीं है, तो किसी दिए गए मामले में, यह बताना कि क्या कोई व्यक्ति ठीक इसलिए पीड़ित हो सकता है क्योंकि भगवान उस व्यक्ति को सुधारना चाहता है या सिर्फ़ भगवान के अनुशासन को भुगत रहा है क्योंकि वे किसी संदर्भ या अन्य में इतने अनैतिक रहे हैं कि, आप जानते हैं, वे इसके लिए भुगतान कर रहे हैं।

निश्चित रूप से, आचरण के कुछ ऐसे रूप हैं जिनके प्राकृतिक परिणाम दर्दनाक और कठिन होते हैं, जिन्हें ईश्वर ने ब्रह्मांड के ताने-बाने में बुना है, या कम से कम हमारे जीव विज्ञान में। उदाहरण के लिए, यदि आप लगातार यौन रूप से कामुक हैं और आप लंबे समय तक कई अलग-अलग भागीदारों के साथ यौन गतिविधियों में संलग्न हैं, तो अंततः यह संभावना है कि आपको किसी प्रकार का यौन रोग, यौन संचारित रोग हो जाएगा। तो आप अपनी कामुकता के कारण पीड़ित हैं, जो कि, भले ही उस मामले में ईश्वर का विशिष्ट आदेश न हो कि आपको वह यौन रोग हो, उसने दुनिया का निर्माण किया है, और हमारी प्रणाली जैविक रूप से ऐसी है कि यह परिणाम होने की संभावना है।

कोई कह सकता है, हाँ, आपको अपने पाप के लिए दंडित किया जा रहा है या अनुशासित किया जा रहा है, इत्यादि। जो लोग रोगात्मक झूठ बोलते हैं, उन्हें अंततः इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। जो लोग, आप जानते हैं, चोरी या जो कुछ भी करने की आदत में पड़ जाते हैं, उन्हें अंततः इसकी कीमत चुकानी पड़ती है।

वास्तव में, आस्तिक दृष्टिकोण के अनुसार, कोई भी व्यक्ति किसी भी चीज़ से बच नहीं सकता। लेकिन इस दुनिया में, जब लोग पीड़ित होते हैं, तो विचार यह होता है कि कम से कम कभी-कभी उन्हें उनके नैतिक अपराधों के लिए दंडित या अनुशासित किया जा रहा है। लेकिन, जैसा कि एलस्टन ने कहा है, हम अक्सर किसी व्यक्ति के पाप की सीमा या दंड के माध्यम से पीड़ित होने की सीमा का आकलन करने की स्थिति में नहीं होते हैं, जिसका सुधारात्मक प्रभाव हो सकता है।

हमारे पास ज़्यादातर मामलों में योग्य निर्णय लेने के लिए पर्याप्त जानकारी नहीं होती। कई बार, यहाँ तक कि हमारे अपने मामले में भी, आप जानते हैं, हम सोचते हैं, क्या मैं अभी ईश्वरीय अनुशासन के कारण पीड़ित हूँ, या यह सिर्फ़, आप जानते हैं, मैं दुर्भाग्य का सामना कर रहा हूँ, या शायद मुझे इसलिए सताया जा रहा है क्योंकि मैं किसी स्थिति में धर्मी था। धर्मी पीड़ा जैसी एक चीज़ होती है, और इसे सुलझाना बहुत मुश्किल हो सकता है।

एलस्टन की बात यहाँ भी लागू होती है, कि हम एक बहुत ही समझौतावादी, ज्ञानात्मक स्थिति में हैं। हमारे पास केवल कुछ ही तथ्य हैं, और हम उन्हें, आप जानते हैं, कभी-कभी गलत तरीके से समझ सकते हैं। इसलिए, यह वास्तव में एक तरह की विनम्र खुराक है, ठीक है, जिसे हमें पहचानने की आवश्यकता है।

और इस संदर्भ में, जब आप इस दुनिया में बुराई की वास्तविकता के कारण ईश्वर के अस्तित्व या गैर-अस्तित्व के बारे में निर्णय लेते हैं, तो एलस्टन कहते हैं कि यह मानवीय तर्क और ज्ञान के उद्धार में बहुत अधिक आश्वस्त होना है, जितना हमें होना चाहिए। एक और थियोडिसी तथाकथित आत्मा-निर्माण थियोडिसी है, जो कहती है कि ईश्वर हमारे अंदर अच्छे चरित्र लक्षणों को विकसित करने और अंततः अनंत काल के लिए हमारे साथ एक प्रेमपूर्ण संबंध बनाने के लिए दुख की अनुमति देता है। हम सभी प्रकार के मामलों की पहचान करने में सक्षम हैं जहाँ एक दिया गया व्यक्ति हमारे अपने जीवन में दुख और कठिनाई के माध्यम से महत्वपूर्ण रूप से विकसित होता है।

हम ऐसे मामलों की ओर इशारा कर सकते हैं जहाँ हमने नैतिक रूप से महत्वपूर्ण रूप से सुधार किया। हो सकता है कि हम अपने विश्वास में अधिक गंभीर हो गए हों, लोगों के साथ अपने रिश्तों के बारे में अधिक गंभीर हो गए हों और हम उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, क्योंकि हमने जो कुछ भी सहा है, उसके कारण हम उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं। तो, आप जानते हैं, नाइकी का नारा, आप इसे बम्पर स्टिकर पर देखते हैं: बिना दर्द के, बिना लाभ के, है न? मेरा मतलब है, यह एथलेटिक्स के लिए मौलिक है, है न? आप जिम में उस हद तक कसरत करते हैं जहाँ यह दर्दनाक हो जाता है।

क्यों? ताकि आप महत्वपूर्ण रूप से लाभ उठा सकें। और इसलिए, यह मानव जीवन के बहुत से हिस्सों पर लागू होता है। आत्मा-निर्माण थियोडिसी में यह एक बुनियादी विचार है।

और यह कहना कि, खैर, इस विशेष मामले में, जो व्यक्ति पीड़ित था, उसके लिए कोई लाभ नहीं था। खैर, आप बस, हम यह नहीं बता सकते। हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि क्या ऐसा है।

जैसा कि उन्होंने कहा, हम दूसरे लोगों के आंतरिक दृष्टिकोण या चरित्र के बारे में विश्वसनीय निर्णायक नहीं हैं, कि वे इससे कितने विकसित हुए हैं या भविष्य में कितने विकसित हो सकते हैं। और हमारे पास मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में बहुत सी जानकारी का अभाव है। यह एक अल्पमत है।

हमें मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी है और इस दुनिया में हम जो दुख झेलते हैं, उसके बावजूद हमारी आत्मा कैसे विकसित होती रहती है, इस बारे में भी हमें बहुत कम जानकारी है। हम नहीं जानते। लेकिन ऐसा हो सकता है।

यदि आप इस दुनिया में लोगों में इस जीवन से परे अगली दुनिया में जो विकास देखते हैं, उससे अनुमान लगाते हैं, तो शायद यह उम्मीद करना उचित है। एक तीसरा थियोडिसी, या जिसे आजकल दार्शनिक बचाव कहना पसंद करते हैं, वह है स्वतंत्र इच्छा बचाव, जो कहता है कि इस दुनिया में बुराई की घटना ईश्वर द्वारा मानव स्वतंत्र इच्छा के अस्तित्व की व्यवस्था का परिणाम है, जो वास्तविक रिश्तों के लिए आवश्यक है। ईश्वर चाहता था कि मनुष्य एक-दूसरे से और उसके साथ स्वतंत्र रूप से संबंध बनाने में सक्षम हो और नैतिक रूप से महत्वपूर्ण प्राणी हो ताकि हम अपने व्यवहार के लिए दोषी और नैतिक रूप से जिम्मेदार हो सकें।

और इस दृष्टिकोण के अनुसार, ऐसा करने का एकमात्र तरीका यह है कि ईश्वर हमें इच्छा की एक निश्चित स्वतंत्रता प्रदान करता है। तो शायद यह बहुत सारी बुराइयों, निश्चित रूप से नैतिक बुराइयों की व्याख्या करता है, जिसके लिए लोग दोषी हैं, कि यह केवल उनकी गलत सलाह थी जिसने एक विशेष दर्दनाक अनुभव को जन्म दिया। और इसके लिए कोई और नहीं बल्कि वह व्यक्ति दोषी है जिसने ऐसा किया।

और भगवान ने उन्हें रोका नहीं क्योंकि वह लोगों की स्वतंत्र इच्छा में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था। तो, क्या यह किसी दिए गए मामले में काम करता है? अच्छा, हो सकता है। शायद नहीं।

लेकिन जैसा कि एलस्टन कहते हैं, हम यह विश्वसनीय रूप से नहीं जान सकते कि किसी विशेष मामले में ईश्वरीय हस्तक्षेप मानव स्वतंत्रता को कितना पराजित कर सकता है। हम बस यह नहीं जानते। हम नहीं जानते कि अगर यह स्वतंत्र इच्छा बचाव सही रास्ते पर है तो इसकी सीमाएँ क्या हैं।

हम नहीं जानते कि ईश्वर द्वारा किसी व्यक्ति को उसकी योजना के अनुसार किसी बुराई से दूर करने की सीमाएँ क्या हैं। और फिर, अंत में, प्राकृतिक कानून थियोडिसी है, जो कहता है कि जीवन की परिस्थितियों को यथोचित रूप से पूर्वानुमानित बनाने के लिए ईश्वर को दुनिया को कानून की तरह बनाना पड़ा। प्राकृतिक बुराई इसका परिणाम है।

तो यहाँ फिर से, हम प्राकृतिक आपदाओं और आनुवंशिक उत्परिवर्तनों, कैंसर, जन्म दोषों, और इसी तरह के हृदय रोग के बारे में बात कर रहे हैं, जो किसी व्यक्ति द्वारा खुद की खराब देखभाल करने का परिणाम नहीं है। कुछ लोगों को जन्मजात हृदय रोग होता है। तो भगवान इसकी अनुमति क्यों देंगे? भगवान तूफान की अनुमति क्यों देंगे? भगवान भूस्खलन की अनुमति क्यों देंगे जिसने उन सभी लोगों को मार डाला और इसी तरह की अन्य घटनाएँ? वह दुनिया को अलग तरीके से क्यों नहीं बनाते ताकि ये चीजें न हों? वह व्युत्क्रम वर्ग नियम को अलग तरीके से क्यों नहीं बनाते और इसे व्युत्क्रम वर्ग नियम भी नहीं बल्कि प्रकृति का एक बहुत ही अलग तरह का नियम बनाते जैसे कि हमारे जैसे शरीर बहुत धीरे-धीरे गिरते हैं ताकि अगर आप 10 मंजिला इमारत से गिरते हैं, तो आपको बस सिर में चोट लगे, या शायद कुछ हड्डियाँ टूट जाएँ, इससे आपकी मृत्यु न हो? भगवान हमारे शरीर को अलग तरीके से क्यों नहीं बना सकते थे ताकि तीसरी डिग्री के जलने से जीवन भर के लिए गंभीर विकृति न हो बल्कि कुछ महीनों के लिए विकृति हो या अंग का नुकसान हो? भगवान ने इंसानों को यूरोडेला सरीसृपों की तरह क्यों नहीं बनाया ताकि वे अपने अंग वापस उगा सकें? क्या यह बहुत बढ़िया नहीं होगा, आप जानते हैं, अगर आपके किसी दोस्त ने अपना पैर खो दिया और यह कहने के बजाय कि आप इससे निपटने के लिए कृत्रिम अंग लगवाने जा रहे हैं, इसके बजाय आप कहें कि यह तीन महीने तक मुश्किल होने वाला है, आप जानते हैं, आपको पैर के फिर से उगने का इंतज़ार करना होगा और यह थोड़ा अजीब होगा, लेकिन फिर, आप जानते हैं, कई महीनों के बाद आपका पैर वापस आ जाएगा और, आप जानते हैं, आपको अपने दूसरे पैर से मेल खाने के लिए मांसपेशियों पर काम करना होगा।

क्या यह बहुत अच्छा नहीं होता अगर अंगों की स्थायी हानि के बजाय यही समस्या होती? क्या भगवान मानव शरीर और उन नियमों को अलग तरीके से नहीं बना सकते थे जो इस तरह की चीजों से संबंधित हैं ताकि हमें ऐसी स्थायी चोटें न हों? हालांकि, एलस्टन ने कहा कि हम सभी जानते हैं कि इस दुनिया की कई वांछनीय विशेषताएँ हैं जो खो जाएंगी यदि भगवान ने दुनिया को कानून जैसी नियमितताओं के संदर्भ में बहुत अलग बनाया। चूंकि हम इन प्रकार की चीजों के बारे में अलग-अलग सोचते हैं, इसलिए इसे अनदेखा करना आसान है, और हम शायद उस ब्रह्मांड के परिणामों को अनदेखा कर रहे हैं, जिसके संबंध में, आप जानते हैं, बहुत अलग नियम थे। और भले ही उसने मानव शरीर को इस तरह से बनाया हो कि यह कुछ गंभीर आघातों से अधिक आसानी से उबर जाए, शायद वहाँ कुछ खो जाएगा जो अंततः अच्छा है।

हम बस नहीं जानते। फिर से, यह हमारी ज्ञानात्मक स्थिति की सीमा है। सिर्फ इसलिए कि कुछ ऐसा लगता है, इसका मतलब यह नहीं है कि यह निश्चित रूप से ऐसा ही है।

इसलिए, मुझे लगता है कि इन मुद्दों के साथ-साथ कई अन्य मुद्दों पर ज्ञानात्मक विनम्रता को मजबूत करने के मामले में एल्स्टन के अवलोकन बहुत मददगार हैं। एल्स्टन ने यह नोट करते हुए निष्कर्ष निकाला कि शायद अभी भी ऐसे मजबूत अकल्पनीय धर्मशास्त्र हैं जो संदेह करने के लिए और भी अधिक कारण प्रदान कर सकते हैं कि वास्तव में अनावश्यक बुराईयाँ हैं। आप जानते हैं, मानव इतिहास के दौरान, इन अन्य धर्मशास्त्रों को तैयार किया गया था, और एक समय था जब उन पर चर्चा नहीं की गई थी या यहाँ तक कि उनके बारे में सपना भी नहीं देखा गया था, और अच्छे विचारक, दार्शनिक और धर्मशास्त्री उनके साथ आए।

कौन जानता है कि आने वाले वर्षों में कौन सी थियोडिसी तैयार की जाएगी जो बुराई की समस्या से निपटने में इन सभी थियोडिसी की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी होगी, जिनकी हमने चर्चा की है। तो हमें यह क्यों मानना चाहिए कि सभी अच्छे थियोडिसी का पता लगाया जा चुका है? आप जानते हैं, प्रौद्योगिकी के इतिहास में, हमेशा एक तरह की भावना होती है कि, ठीक है, सभी महान आविष्कारों का आविष्कार किया गया है, सभी महान तकनीकी उपलब्धियाँ हासिल की गई हैं, और फिर समय बीतता है, और आपके पास और भी महान आविष्कार होते हैं, और यह सोचना कि हम मानव प्रौद्योगिकी की सीमा तक पहुँच गए हैं, मूर्खतापूर्ण लगता है। मुझे लगता है कि दर्शन के इतिहास में भी कुछ ऐसा ही है, जहाँ, हाँ, ऐसा लगता है कि हमने सभी संभावित सिद्धांतों को समाप्त कर दिया है, और शायद एक सामान्य अर्थ में, हमने ऐसा किया है, लेकिन नए सिद्धांत तैयार किए जाते हैं, पुराने सिद्धांतों के नए रूपांतर जो आश्चर्यजनक रूप से नवीन हैं, जो सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान करते हैं।

इस अर्थ में, दर्शनशास्त्र, साथ ही धर्मशास्त्र और अन्य क्षेत्र जो अधिक, कहीं, वैचारिक या मानविकी में हैं, आगे बढ़ते हैं, भले ही आपको उस समय विद्वानों के बीच एक समान सहमति न हो, जैसा कि आप कुछ अन्य क्षेत्रों में पाते हैं जो अधिक अनुभवजन्य हैं, जैसे कि कठिन विज्ञान। तो, कौन जानता है कि नए थियोडिसीज़ के संदर्भ में क्या हो सकता है जो संभावित रूप से बुराई की समस्या को शांत कर सकता है, और यह भी, अच्छी तरह से, यह भी पहचानना है कि इनमें से कुछ थियोडिसीज़ पहले से ही बहुत शक्तिशाली हैं। मुझे लगता है कि स्वतंत्र इच्छा बचाव, साथ ही साथ आत्मा-निर्माण धर्मशास्त्र विशेष रूप से, बुराई की समस्या को शांत करने में एक लंबा रास्ता तय करते हैं, भले ही वे इसे पूरी तरह से हल न करें।

मुझे लगता है कि वे हमें यह मानने के लिए बहुत सारे अच्छे कारण देते हैं कि यह आस्तिक के लिए विनाशकारी समस्या नहीं है। तो यह बुराई की समस्या है।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 9 है, बुराई की समस्या।